REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

हरियाणा में जल संसाधन एक भोगौलिक विश्लेषण

Anjana[1] and Dr. Paras Verma[2]
[1] Ph. D Research Scholar, (Geography), OPJS University, Churu Rajasthan.
[2] Guide, Associate Professor OPJS University, Rajasthan.

परिचय :–

हरियाणा प्रदेश भारत के उत्तरी–पश्चिमी भाग में 27^0, $39^|$ उत्तरी अक्षांश से 30^0, $55^|$ उत्तरी अक्षांश तथा 74^0, $28^|$ पूर्वी देशान्तर से 77^0, $36^|$ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। हरियाणा राज्य के पूर्व में यमुना नदीं उत्तर प्रदेश व हरियाणा की सीमा निर्धारित करती है। हरियाणा भारत का भू–आवेष्ठित राज्य है। हरियाणा के दक्षिण–पूर्व में केन्द्रशासित राज्य दिल्ली है। जिसके तीनों ओर हरियाणा पड़ता है। हरियाणा का क्षेत्रफल 44,212 वर्ग किलोमीटर है। जो देश के कुल क्षेत्रफल का 1.34 प्रतिशत है। सन् 2011 कि जनगणना के अनुसार हरियाणा कि कुल जनसंख्या 25,35,14,62 है। हरियाणा राज्य के पूर्नगठन के समय 7 जिले थे लेकिन वर्तमान में 22 जिले है। चण्ड़ीगढ़ पंजाब एवं हरियाणा की सांझी राजधानी होने के साथ–साथ केन्द्रशासित प्रदेश है। किसी भी देश के कृषि विकास में सिंचाई होना अति आवश्यक है जल कृषि को या तो सीधे ही वर्षा द्वारा प्राप्त होता है या फिर जल को कृत्रिम रुप से खेतों तक पहुचाया जाता है। ''वर्षा के अभाव में कृत्रिम रुप से खेतों तक जल पंहुचानें की क्रिया को सिंचाई कहते है।

जल जीवन के लिए अति आवश्यक संसाधन है पुरे सौरमण्डल में पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जहां पर जल मिलता है इसी कारण यहां पर जीवन पाया जाता है पृथ्वी पर पौधों, पशुओं तथा मानव जीवन के विकास के लिए जल आवश्यक है मानव जल का उपयोग कृषि, पशुपालन, उद्योग, निमार्ण तथा घरेलु कार्यो में करता है। हरियाणा एक कृषि प्रधान राज्य है अतः सिंचाई के बिना हरियाणा का विकास किसी भी क्षेत्र में सम्भव नहीं है हरियाणा में कृषि विकास के लिए खेतो में सिचाई अलग–अलग तरीकों से की जाती है। प्राचीन समय में नदियों, नालों के कारण हरा–भरा क्षेत्र और अनाज का भण्डार कहलाता था वर्तमान समय में हरियाणा यद्धपि गंगा–सतलुज के विशाल मैदान का ही भाग है हरियाणा में कोई बड़ी अथवा महत्वपूर्ण नदीं नहीं बहती कुछ नदियां इस राज्य की सीमाओं के समीपवर्ती क्षेत्र में बहती है राज्य की कुछ महत्वपूर्ण नदियों में यमुना, घग्धर, मारकण्डा, सरस्वती, साहिबी आदि है। हरियाणा के जल संसाधनों को दो भागों से बांटा जाता है।

सतही जल संसाधन :–

सतही जल संसाधन से अभिप्रायः नदियों एवं नहरों द्वारा सतह पर होने वाली सिंचाई से है। प्राचीनकाल में नदियों नहरों तथा अन्य स्त्रोतों के वाहुल्य के फलस्वरुप हरियाणा हरा–भरा क्षेत्र व अनाज भण्डार कहलाता था हरियाणा की प्रमुख नदियों का वर्णन इस प्रकार होंगें।

1. यमुना नदी :–

यमुना नदीं उतरांचल राज्य के गढवाल हिमालय में स्थित बंदरपूछ के पश्चिमी ढाल पर यमुनोत्री हिमनदी से 6330 मीटर की ऊँचाई से निकलती है और ताजेवाला नामक स्थान पर मैदानी भाग में प्रवेश करती है। यमुना नदी हरियाणा की महत्वपूर्ण एवं गंगा की सहायक नदी है। यह नदी दक्षिणी हरियाणा में फरीदाबाद

के हुसनपुर नामक स्थान से पूर्व में मुडकर उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले की सीमा में जाती है यह नदी राज्य की पूर्वी सीमा के सहारे यमुनानगर, करनाल, पानीपत, सोनीपत, फरीदाबाद जिलो के किसानों को कृषि हेतु पानी उपलब्ध करवाती है। यह नदी हरियाणा और उत्तरप्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र में 320 कि.मी. लम्बी सीमा रेखा बनाती है।

2. घग्गर –

घग्गर एक मौसमी नदी है। इसका उदगम हिमाचल प्रदेश में शिमला के समीप डागशई स्थान से हुआ। हरियाणा में यह नदी कालका के निकट प्रवेश करती है। पंचकुला, अम्बाला, कैथल, फतेहाबाद , सिरसा में बहती हुई राजस्थान के हनुमानगढ़ के निकट मरुस्थलीय क्षेत्र में लुप्त हो जाती है।

3. साहिबी नदी :–

साहिबी नदी का उदगम राजस्थान के जयपुर जिले में शाहपुरा से 8 कि.मी. उत्तर–पश्चिम में बाजीजोरी के निकट बैराक पहाडी से होता है राजस्थान में लगभग 145 कि.मी. के निकट हरियाणा राज्य में प्रवेश करती है। राजस्थान में बायीं और 88 कि.मी. पर मिलने वाली मुख्य सहायक बडी स्त्रोत है वायी और से मिलने वाली मुख्य जलधाराऐ कोटकासिम के पास हरियाणा में इंदौरी नाला है इंदोरी नाले का स्त्रोत नूंह तहसील के निकट है इस नदीं का स्पष्ट बहाव पथ मासानी के नीचे तक है भारतीय सर्वेक्षण विभाग के अनुसार यह रेतीली भूमि में लीन हो जाती है परन्तु फिर भी यह मान्यता है कि इस नदी का जल प्रवाह हरियाणा से दिल्ली तक धांसा बांध में पहुंचता है नजफगढ नाले द्वारा साहिबी अन्नतः यमुना नदी में जा मिलती है। सेता व यमुना इसकी सहायक नदियां है। स्थानीय लोगों का मत है कि अनेक वर्षो से नदी दृष्टिगत नहीं हो रही है राजस्थन सरकार ने इस नदी पर बांध बना लिया है जिसके फलस्वरुप बरसात में भी अब पानी नहीं आता है।

हरियाणा कि प्रमुख नदियाँ

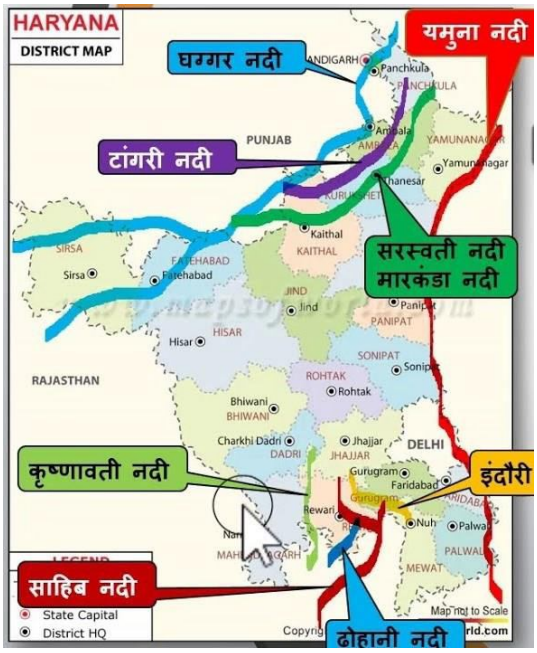

4. दोहन एवं कृष्णावती नदी :–

हरियाणा राज्य के महेन्द्रगढ़ व नारनोल तहसीलों में पहले यह नदियां बहती थी परन्तु वर्तमान में इनका अस्तित्व समाप्त हो गया तथा ये नदियां अब दृष्टिगत नहीं होती है। हरियाणा में इब इन नदियों का कोई महत्व नहीं रहा। कभी–कभार वर्षा होने पर नाले के रुप में बहती हुई दिखाई देती है।

5. सरस्वती नदी :–

यह नदी सिरमौर (हिमाचल प्रदेश) से निकलती है और अम्बाला, कुरुक्षेत्र, कैथल से होकर बहती यह घग्गर में मिलकर अजमेर(राजस्थान) में प्रवेश करती है प्राचीन समय में यह बारहमासी नदी थी किन्तु वर्तमान में यह बरसाती नदी बनकर रह गई है। ऋग्वेद काल में यह बहुत बड़ी और पवित्र नदी थी जो अरब सागर में मिल जाती थी। मारकंडा व टांगरी इसकी सहायक नदियां है।

6. मारकंड़ा नदीं :–

यह नदीं हिमाचल प्रदेश के निकट शिवालिक क्षेत्र से अम्बाला के नजदीक प्रवेश करती है यह गंगा सिन्धु जल विभाजक की छोटी नदी है। इसमें बाढ़ के कारण अधिक निक्षेप पाऐ जाते है। मारकंडा नदी का प्राचीन नाम अरुणा था।

7. टांगरी नदी –

यह मारकंडा नदीं की उप–नदीं है यह मोरनी की पहाडियों से निकलती है यह अम्बाला में बढ़ती हुई राजस्थान में प्रवेश कर जाती है यह मुलाना के समीप मारकण्डा नदीं में मिल जाती है।

8. इंदोरी नदी/नाला :–

यह नदीं नूह(मेवात) के निकट मेवात की पहाडियों से निकलती है साहीना इसकी सहायक नदी है इन्दोरी दो शाखाओं में बंटकर एक शाखा रेवाडी के पास साहबी में मिलती है तथा दूसरी शाखा कुछ अन्य बरसाती नालों का पानी लेने के बाद पटौदी के निर्कट साहिबा नदीं में मिल जाती है।

नहरें :–

नहरे सिंचाई के प्रमुख साधन के रुप में कार्य करती है परन्तु हरियाणा में नहरों का विकास समान रुप से नहीं है दक्षिणी हरियाणा में नहरों का विकास बहुत ही कम है। अधिकांश कृषि किसान ट्येबलों द्वारा सिंचाई कर करते है।

नहरें मुख्य रुप से दो प्रकार की होती है।

1. नित्यवाही नहरें।
2. अनित्यवाही नहरें।

1. नित्यवाही नहरें –

इस प्रकार की नहरे उन नदियों से निकाली जाती है। जिसमें जल सदा प्रवाहित होता रहता है कभी–कभी नदी पर बांध बनाकर भी नहर निकाली जाती है और नहर में जल का प्रयोग कृषि कार्यो के लिए किया जाता है हरियाणा में यमुना नहर के अतिरिक्त कोई बडी नहर नहीं है।

2. अनित्यवाही नहरें –

इस प्रकार की नहरों में जल उस समय उपलब्ध होता है जब नदी में बाढ़ आई हुई होती है। अतः इस प्रकार की नहरें शुष्क मौसम में सूख जाती है इससे सिंचित भूमी में केवल एक ही फसल प्राप्त की जाती है। लेकिन अब बहुत सी अनित्यवाही नहरों को नित्यवाही नहरों में परिवर्तीत किया गया है। धीरे–2 इनकी संख्या में कमी आ रही है। चूंकी दक्षिण हरियाणा का काफी क्षेत्र शुष्क रहता है। यहां पर बाढ़ जैसी स्थिति बहुत ही कम बन पाती है उत्तर प्रदेश तथा पंजाब की भांति हरियाणा में वर्षा की कमी के कारण सिंचाई के साधन जुटाने पडते है। यहाँ पर अधिकांश सिंचाई नहरों तथा ट्यूबेलों द्वारा होती है।

हरियाणा की प्रमुख नहरें निम्नलिखित है –

1. पश्चिमी यमुना नहर –

यह हरियाणा की यमुना से निकलने वाली नहर है ये ताजेवाल वैराज नामक स्थान से निकाली गई है पश्चिमी यमुना नहर फिरोज तुगलगक ने बनाई थी। यह 19 वीं शताब्दी में बनी थी। यह यमुनानगर, करनाल, दिल्ली, झज्जर, सोनीपत आदि जिलों को सींचती है।

2. गुडगांव नहर –

ओखलां से 2–4 किलोमीटर की दूरी पर यमुना नदीं पर एक बांध बनाकर गुडगांव नहर निकाली गई है इस नहर का निर्माण कार्य अक्टूबर 1970 में आरम्भ हो गया था ।

3. भाखडा नहर –

यह फतेहबाद में टोहना में प्रवेश करती है बरवाला फतेहाबाद सिरसा, जसिया भिवानी, महेन्द्रगढ़ इन जिलों में सिंचाई का कार्य करती है।

4. जुई नहर :–

हरियाणा सरकार ने सिंचाई की व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए कई योजनाएं बनाई है जिसमें दक्षिण हरियाणा में जुई नहर निर्माण योजना सबसे महत्वपूर्ण है। इस योजना पर कार्य 1969 में आरम्भ किया गया था। यह एक लिफ्ट सिंचाई स्कीम है इस नहर की लम्बाई हरियाणा में 170 किलोमीटर है इस नहर से हिसार तथा रेवाडी रेलवें स्टेशन के साथ–साथ लगभग 32 हजार हैक्टीयर भूमी पर सिंचाई होती है। इस नहर की योजना उचाई वाले क्षेत्रों को सिंचित करने के लिए बनाई गई है।

5. जवारलाल नेहरु नहर :–

हरियाणा की यह नहर रेवाड़ी के अधिकांश गांव में पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराती है। साथ ही लगते महेन्द्रगढ़ जिले तक किसानों को कृषि हेतु सिंचाई सुविधा भी उपलब्ध कराती है।

निष्कर्ष के रुप में कहा जा सकता है कि हरियाणा जैसे राज्य के पूर्वी एवं उत्तरी क्षेत्रों में नहरों की अच्छी सुविधाऐं होने से किसान अपनी फसलों का भरपुर फायदा ले रहा है। वहीं पश्चिमी एवं दक्षिणी क्षेत्रों में बनी कुछ पुरानी नहरों को साफ करवाकर किसानों को सिंचाई हेतु पानी उपलब्ध करवाने का प्रयास वर्तमान सरकार द्वारा किया जा रहा है। बावजूद इसके किसानों को कृषि हेतु पर्याप्त पानी नहीं मिल पा रहा है। इसलिए इस क्षेत्र के किसान ट्यूबैल पर अधिक निर्भर होकर अपना कृषि कार्य कर रहे।

सन्दर्भ सूची –

1. लाल, एस.डी.(2004) – जलवायु विज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद।
2. जिला सांख्यिकीय कार्यालय – नारनौल, महेन्द्रगढ़, गुड़गाँव, फरीदाबाद।
3. शर्मा, बी.एल., कमठानिया संजय, सिंहल, विपिन – हरियाणा एक अध्ययन, आगरा।
4. जिला सांख्यिकी सारांश(2004) – नारनौल।
5. शर्मा, बी.एल.(1983) – कृषि भूगोल साहित्य, भवन आगरा।

Anjana
Ph. D Research Scholar, (Geography), OPJS University, Churu Rajasthan.